E-Certificate No.
S. No./21-22/SRC-TE-II-14

University Grants Commission

Human Resource Development Centre (HRDC)

Aligarh Muslim University, Aligarh

UGC Sponsored Online Refresher Course

This is to certify that

Mr./Ms./Dr. **DAMODER GAUTAM**, Assistant Professor, Department of Sociology, Govt. College, Jhandutta, Bilaspur (Himachal Pradesh) (H.P. University, Shimla) participated in the On-Line **Subject Refresher Course in Teacher Education (open to all)** from **21 August 2021** to **04 September 2021** organized by UGC Human Resource Development Centre, Aligarh Muslim University, Aligarh and obtained Grade-'**A**'.

Course Coordinator | **Director** | **Registrar**

Indian Sociological Society

National Workshop
on
Enhancement of Research Quality in Young Social Scientists
June 20th to June 26th, 2024

Certificate

This is to certify that Prof/Dr/Mr/Ms. Damoder Gautam, Assistant Professor and Phd Scholar CUHP
ABV Govt College Sunni has actively participated in the National Workshop on Enhancement of Research Quality in Young Social Scientists held from June 20th to June 26, 2024. We wish him/her all success in future endeavours.

Organised by:-

Sociological Society of Uttar Pradesh
Bihar Sociological Society
Madhyanchal Sociological Society
Rajasthan Sociological Society
Marathi Sociological Society
Chhattisgarh Sociological Society
Jharkhand Sociological Society

Prof. Maitrayee Chaudhury
President
Indian Sociological Society

Prof. Shiweta Prasad
Secretary
Indian Sociological Society

Prof. Anshu Kedia
Convener & MC Member
Indian Sociological Society

Certificate of Publication

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS | ISSN: 2320 - 2882

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

The Board of

International Journal of Creative Research Thoughts

Is hereby awarding this certificate to

Damoder Gautam

In recognition of the publication of the paper entitled

Analytical study of the technique of social harmony in the thinking of Dr. Bhimrao Ambedkar

Published In IJCRT (www.ijcrt.org) & 7.97 Impact Factor by Google Scholar

Volume 12 Issue 7 July 2024 , Date of Publication: 24-July-2024

UGC Approved Journal No: 49023 (18)

PAPER ID : IJCRT2407748

Registration ID : 266343

ISSN 2320-2882 IJCRT

EDITOR IN CHIEF

Scholarly open access journals, Peer-reviewed, and Refereed Journals, Impact factor 7.97 (Calculate by google scholar and Semantic Scholar | AI-Powered Research Tool) , Multidisciplinary, Monthly Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS | IJCRT

An International Scholarly, Open Access, Multi-disciplinary, Indexed Journal

Website: www.ijcrt.org | Email id: editor@ijcrt.org | ESTD: 2013

IJCRT | ISSN: 2320-2882 | IJCRT.ORG

IRJMSH

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

UGC ID - 48312

Impact Factor* : 7.8012

Ref:IRJMSH/2023/A1017799

DOI : HTTPS://DOI.ORG/10.32804/IRJMSH

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

THIS CERTIFIES THAT

DAMODER GAUTAM

HAS/HAVE WRITTEN AN ARTICLE / RESEARCH PAPER ON

डा. केशव बलिराम हेडगेवार एवं बाबासाहेब डा. भीमराव आबेडकर के राष्ट्र चिंतन का समाजशास्त्रीय अध्यनन

APPROVED BY THE REVIEW COMMITTEE, AND IS THEREFORE PUBLISHED IN

Vol – 14 , Issue – 9 Sep , 2023

Editor in Chief

www.IRJMSH.com

Teaching Learning Centre
Ramanujan College, University of Delhi
(Accredited Grade 'A++' by NAAC)
under the aegis of
MINISTRY OF EDUCATION
PANDIT MADAN MOHAN MALAVIYA NATIONAL MISSION ON TEACHERS AND TEACHING

This is to certify that

Mr. Damoder Gautam

of

Assistant Professor Department of Sociology ABV Govt College Sunni Distt Shimla HP

has successfully completed online Inter-Disciplinary two-week Refresher Course in

"Managing Online Classes & Co- creating MOOCS"

from *07 – 21 January, 2024* and obtained

Grade *A+*.

Blockchain Hash: 0x64b8cf517b6e76f1a9fe549442b34568c5e1cd8dcc9444f9f947e69faf9819ed

Prof. S. P. Aggarwal
(Principal & Director)
TLC, Ramanujan College

Dr. Nikhil Kr Rajput
(Deputy Director)
Ramanujan College

Mr. Vipin Rathi
(Convenor)
Ramanujan College

Third SSHP International Conference (Hybrid)

on

Development in Mountains: Issues, Challenges and Solutions

Organised by

Govt. Degree College Darlaghat, District Solan, Himachal Pradesh

In collaboration with

Indian Sociological Society, RC-11, RC-19 & RC-21 of ISS, ISS-National Council of Regional Associations and Working Group-5 of International Sociological Association

Certificate

This is to certify that Prof./ Dr./ Mr./Ms. **Damoder Gautam** Conference ID: **sshpdal/23/230** Designation **Assistant Professor** has Participated/Presented Paper/Chaired/Co-chaired a session/ invited speaker **Paper Presenter** entitled **Bhartiya Parparayen or paryaavarniya snvednaye: ek samajshastriy vishleshan** in *Third SSHP International Conference (Hybrid)* organised by Govt. College Dalraghat, District Solan, Himachal Pradesh, India from 11-12 December, 2023.

Dr. Ruchi Ramesh
Principal cum Patron
Govt. College Dalraghat

Dr. JP Sharma
Conference Convenor
Govt. College Dalraghat

Dr. Mohinder Slariya
General Secretary SSHP, Organising Secretary cum Convenor, Scientific Steering Committee

भारत विविधताओं से परिपूर्ण देश है। यहां का जनजीवन भौगोलिक, धार्मिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक वैभव से संपन्न है। यहां के लोगों की जीवनशैली, सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियां, परिवार व्यवस्था, मेले, पर्व, तीज, त्यौहार, धार्मिक अनुष्ठान, सामुदायिक आयोजन लोक संस्कृति को विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं। हिमाचल प्रदेश के अनेक गांव अपनी संस्कृति, अर्थव्यवस्था, शिल्प कला, और विभिन्न गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध हैं। यहां के प्रमुख व्यक्तित्व अनेक क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने में भी कामयाब हुए हैं। राष्ट्रीय एवं प्रांतीय स्तर के अनेक आंदोलनों में यहां के लोगों की सक्रिय भागीदारी रही है। भारतीय ऐतिहासिक घटनाओं में हिमाचल प्रदेश के लोगों की भागीदारी से यहां का जनजीवन प्रभावित रहा है। हिमाचल का प्रत्येक गांव अपनी सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं, व्यवसाय, अर्थव्यवस्था, कृषि, सामाजिक समरसता के लिए अपना अस्तित्व बनाए हुए है। ऐसे में चुनिंदा गांवों के इतिहास और संस्कृति का विवेचनात्मक अध्ययन एक अत्यंत कठिन चुनौतीपूर्ण एवं श्रमसाध्य कार्य है। हिमाचल प्रदेश के गांव का इतिहास पुस्तक को दो भागों में प्रकाशित करके शोध संस्थान नेरी ने एक ऐतिहासिक कार्य को अंजाम दिया है। इन पुस्तकों के माध्यम से गांव के इतिहास एवं संस्कृति को जानने में सहायता मिल सकेगी।

डॉ. सिकन्दर कुमार
सांसद, राज्यसभा

गांव का इतिहास

हमीरपुर के झंडवी गांव में जन्मे प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता एवं चिंतक ठाकुर रामसिंह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। सन् 1941 में लाहौर से एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सितंबर 1941 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बने। नौकरी के प्रलोभन को ठुकरा कर राष्ट्रभक्ति के मार्ग को चुना और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बन गए। कांगड़ा, अमृतसर में प्रचारक रहे। पूज्य श्री गुरु गोलवलकर जी ने उन्हें असम प्रांत के प्रचारक का दायित्व प्रदान किया। 1949 से 1971 तक लगभग 22 वर्ष असम के प्रांत प्रचारक रहे तथा पूर्वोत्तर भारत में संघ के कार्य को विस्तार दिया। सन् 1992 में ठाकुर रामसिंह जी सर्वसम्मति से अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गए। सन् 2002 तक राष्ट्रीय अध्यक्ष का दायित्व निभाते हुए ठाकुर रामसिंह जी ने विदेशी आक्रांताओं की स्तुति में लिखे गए भारतीय इतिहास की भ्रांतियां को दूर करके राष्ट्रीय इतिहास की वैभवशाली समृद्ध परंपरा को प्रकाश में लाने के लिए सुव्यवस्थित कार्य योजनाएं बनाईं, जिसके परिणामस्वरूप देश के सभी प्रांतों में गठित समितियों के माध्यम से आर्य भारत के मूल निवासी हैं, महाकल्प, कल्प, मन्वंतर एवं चतुर्युगी व्यवस्था पर आधारित भारतीय वैज्ञानिक कालगणना, वर्ष प्रतिपदा, कलियुगाब्द की 52वीं शताब्दी इत्यादि राष्ट्रीय महत्व के विषयों से अवगत करवाने के देशव्यापी कार्य इनकी सुदृढ़ निष्ठा और ज्ञान अनुभव से सफल हो पाए। इतिहास संकलन योजना में अपनी मातृभूमि, पुण्यभूमि, भारत की प्राचीनता और गौरवमय अतीत को प्रकाश में लाने के लिए भारतीय ऐतिहासिक दृष्टि से मानक सिद्धान्त स्थापित करते हुए ऐतिहासिक स्रोतों, लोकश्रुतियों, नवीन पुरातात्विक खोजों और राष्ट्रीय दृष्टिकोण से इतिहास लेखन को प्राथमिकता प्रदान की। उनका कथन था कि ऐसा इतिहास लिखने की आवश्यकता है जो केवल पराजय की ही कहानियां न कहे अपितु वह राष्ट्रमानस के लिए प्रेरणा का स्रोत बने, जिसे पढ़कर हम गौरव से अपना सर ऊंचा कर सकें।

हमीरपुर जिला के नेरी गांव में 7 अक्तूबर, 2002 को शोध संस्थान की स्थापना हुई। इस शोध संस्थान के माध्यम से ठाकुर जी ने वर्तमान श्वेतवाराह कल्प के 197 करोड़ वर्ष के इतिहास लेखन की योजना का दिशा-निर्देश किया है, जिस पर शोध संस्थान में सक्रियता से कार्य हो रहा है।

जनवरी 2015 — डॉ. विद्या चंद ठाकुर

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान
गांव व डाकघर नेरी, तह. व जिला हमीरपुर (हि.प्र.)-177001

देवयानी पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
781, ग्राउंड फ्लोर, [illegible] अपार्टमेंट,
सैक्टर-28, रोहिणी, दिल्ली-110042

₹ 800/-
ISBN : 978-93-[illegible]

गांव का इतिहास
भाग-एक
सम्पादक
डॉ. अंकुश भारद्वाज

गांव का इतिहास

हिमाचल प्रदेश के बारह जिलों के चयनित
बारह गांव का विवेचनात्मक अध्ययन
भाग - एक

सम्पादक
डॉ. अंकुश भारद्वाज

डॉ. अंकुश भारद्वाज पिछले सात वर्षों से हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला के इतिहास विभाग में सह-आचार्य के पद पर कार्यरत है और विभाग के अध्यक्ष के रूप में भी अपनी सेवाएं दे चुके हैं। पिछले उन्नीस वर्षों से अध्यापन के क्षेत्र में कार्यरत है।

डॉ. अंकुश भारद्वाज हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले से संबंध रखते हैं। इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से इतिहास विषय में स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी की उपाधि अर्जित की है। आप एक कुशल प्रशासक एवं विषय विशेषज्ञ प्राध्यापक हैं। आपके निर्देशन में अब तक दो शोधार्थियों ने पीएच.डी. और चार शोधार्थियों ने एम.फिल की उपाधि अर्जित की है और लगभग छह पीएच.डी. शोधार्थी शोधरत हैं।

विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों एवं संगोष्ठियों में मुख्यवक्ता तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन कर चुके हैं। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में आपके अब तक 19 शोध आलेख प्रकाशित हो चुके हैं। शोध संस्थान नेरी द्वारा दो खण्डों में प्रकाशित पुस्तक 'हिमाचल प्रदेश के गांव का इतिहास' इनकी विशिष्ट कृतियां हैं।

सम्प्रति : सह-आचार्य, इतिहास विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

अनुक्रमणिका

क्र.	जिला	गांव	लेखक	पृष्ठ
1.	सिरमौर	झकाण्डो	बारू राम ठाकुर	9
2.	सोलन	जौणाजी	डॉ. शिव भारद्वाज	55
3.	शिमला	बटेवड़ी	आचार्य ओम प्रकाश शर्मा	81
4.	किन्नौर	रिब्बा	रोशनी देवी, शान्ता नेगी	108
5.	बिलासपुर	पंजगांई	दामोदर गौतम	132
6.	ऊना	डोहगी	डॉ. ओम दत्त सरोच डॉ. राजकुमार	156
	लेखक परिचय			187

जिला बिलासपुर

पंजगांई

दामोदर गौतम

परिचय

हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिला के खण्ड सदर के गांव पंजगांई का इतिहास, समाज, संस्कृति और सभ्यता के विविध पक्षों को समेटे हुए है। इस गांव को पांडव-भूमि भी कहा जाता है, जिसका सीधा सम्बन्ध महाभारत काल के साथ जुड़ता है। इतिहास-लेखन में दंतकथाओं का अपना एक विशेष महत्व है परन्तु इतिहासकारों के लिए लोक की मान्यताओं को तथ्यों से जोड़ने का महत्त्वपूर्ण कार्य करना होता है। इसका समाधान भी समाज के अध्ययन से ही मिलता है।

[illegible]च धारों (लघु पर्वत शृंखलाएं) [illegible] के मध्य बसे पांच गांव को स्थानी[illegible] में पंचगा[illegible] गया है। पंजगाई नाम पांच गांव [illegible]कर बना है। इसमें - पंजगांई, बलोह, धा[illegible]कोठी, रोपा बगोंण और कनौण गांव सम्मिलित हैं। पांच धारों से एक जगह एकत्र होने वाले पानी को 'खाला'

12:18 PM
Document from dam...

जिला बिलासपुर

पंजगांई

दामोदर गौतम

परिचय

हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिला के खण्ड सदर के गांव पंजगांई का इतिहास, समाज, संस्कृति और सभ्यता के विविध पक्षों को समेटे हुए है। इस गांव को पांडव-भूमि भी कहा जाता है, जिसका सीधा सम्बन्ध महाभारत काल के साथ जुड़ता है। इतिहास-लेखन में दंतकथाओं का अपना एक विशेष महत्व है परन्तु इतिहासकारों के लिए लोक की मान्यताओं को तथ्यों से जोड़ने का महत्त्वपूर्ण कार्य करना होता है। इसका समाधान भी समाज के अध्ययन से ही मिलता है।

पांच धारों (लघु पर्वत शृंखलाएं) एवं पर्वतों के मध्य बसे पांच गांव को स्थानीय बोली में पंचगांई कहा गया है। पंजगाईं नाम पांच गांव से मिलकर बना है। इसमें - पंजगांई, बलोह, धोणकोठी, रोपा बगोंण और कनौण गांव सम्मिलित हैं। पांच धारों से एक जगह एकत्र होने वाले पानी को 'खाल़ा' कहा गया है। गहरा स्थान जहां पानी एकत्र होता है, उसे भी खाल़ा कहा जाता है। अतः पंजगांई को 'पंजगांई रा खाल़ा' नाम से भी जाना जाता था।

भौगोलिक स्थिति

भौगोलिक दृष्टि से पूर्व में कनौण और धौणकोठी, दक्षिण में रोपा बगौण, गाहर-टिकरी, पश्चिम में पंजगांई तथा उत्तर में कुनणु-बलोह, थड़-मनाल़ गांव स्थित हैं। आंतरिक तौर पर कनोण और धौणकोठी से रौपा बगौण की दूरी डेढ़ किलोमीटर है, रौपा-बगौण से गाहर-टिकरी एक किलोमीटर और पंजगांई दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। पंजगांई गांव 31°23'37'' अक्षांश व 76°50'24'' देशान्तर पर स्थित है। जब हम पूरे पथ को 180 अंश पर जोड़ते हैं तो यह पूर्ण घेरा 9 किलोमीटर बनकर पांचों गांवों को आपस में जोड़ता है। इसके पूर्व में पीपलू तथा डलीधार जिसकी ऊंचाई क्रमशः 900 और 1100 मीटर है। दक्षिण में संवा-सारडू (850-800) धार है, पश्चिम में समधार की लम्बाई 3 कि.मी. तथा ऊंचाई 750 मीटर है। उत्तर दिशा में कराड़ग जिसे औहर की धार भी कहा जाता है, की ऊंचाई 800 मीटर है। सम्पूर्ण क्षेत्रफल एक हजार हैक्टेयर है। पंजगाई बिलासपुर जिला मुख्यालय से 20 किलोमीटर की दूरी पर उत्तर-पूर्व और प्रदेश की राजधानी शिमला से 80 किमी दूर है। बिलासपुर से कुल्लू-मनाली राष्ट्रीय उच्चमार्ग गांव बैरी सड़क पंजगांई से मात्र अढ़ाई किलोमीटर की दूरी से निकलता है। 2011 की जनगणना के आधार पर यहाँ की जनसंख्या 4944 दर्ज की गई है।

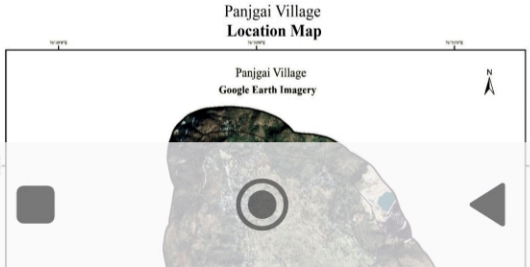

12:18 PM
Document from dam...

दामोदर गौतम

परिचय

हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिला के खण्ड सदर के गांव पंजगांई का इतिहास, समाज, संस्कृति और सभ्यता के विविध पक्षों को समेटे हुए है। इस गांव को पांडव-भूमि भी कहा जाता है, जिसका सीधा सम्बन्ध महाभारत काल के साथ जुड़ता है। इतिहास-लेखन में दंतकथाओं का अपना एक विशेष महत्व है परन्तु इतिहासकारों के लिए लोक की मान्यताओं को तथ्यों से जोड़ने का महत्त्वपूर्ण कार्य करना होता है। इसका समाधान भी समाज के अध्ययन से ही मिलता है।

पांच धारों (लघु पर्वत शृंखलाएं) एवं पर्वतों के मध्य बसे पांच गांव को स्थानीय बोली में पंचगांई कहा गया है। पंजगाईं नाम पांच गांव से मिलकर बना है। इसमें - पंजगांई, बलोह, धोणकोठी, रोपा बगोंण और कनौण गांव सम्मिलित हैं। पांच धारों से एक जगह एकत्र होने वाले पानी को 'खाला' कहा गया है। गहरा स्थान जहां पानी एकत्र होता है, उसे भी खाला कहा जाता है। अतः पंजगांई को 'पंजगांई रा खाला' नाम से भी जाना जाता था।

भौगोलिक स्थिति

भौगोलिक दृष्टि से पूर्व में कनौण और धौणकोठी, दक्षिण में रोपा बगौण, गाहर-टिकरी, पश्चिम में पंजगांई तथा उत्तर में कुनणु-बलोह, थड़-मनालु गांव स्थित हैं। आंतरिक तौर पर कनोण और धौणकोठी से रौपा बगौण की दूरी डेढ़ किलोमीटर है, रौपा-बगौण से गाहर-टिकरी एक किलोमीटर और पंजगांई दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। पंजगांई गांव 31°23'37'' अक्षांश व 76°50'24'' देशान्तर पर स्थित है। जब हम पूरे पथ को 180 अंश पर जोड़ते हैं तो यह पूर्ण घेरा 9 किलोमीटर बनकर पांचों गांवों को आपस में जोड़ता है। इसके पूर्व में पीपलू तथा डलीधार जिसकी ऊंचाई क्रमशः 900 और 1100 मीटर है। दक्षिण में संवा-सारडू (850-800) धार है, पश्चिम में समधार की लम्बाई 3 कि.मी. तथा ऊंचाई 750 मीटर है। उत्तर दिशा में कराड़ग जिसे औहर की धार भी कहा जाता है, की ऊंचाई 800 मीटर है। सम्पूर्ण क्षेत्रफल एक हजार हैक्टेयर है। पंजगाई बिलासपुर जिला मुख्यालय से 20 किलोमीटर की दूरी पर उत्तर-पूर्व और प्रदेश की राजधानी शिमला से 80 किमी दूर है। बिलासपुर से कुल्लू-मनाली राष्ट्रीय उच्चमार्ग गांव बैरी सड़क पंजगांई से मात्र अढ़ाई किलोमीटर की दूरी से निकलता है। 2011 की जनगणना के आधार पर यहाँ की जनसंख्या 4944 दर्ज की गई है।

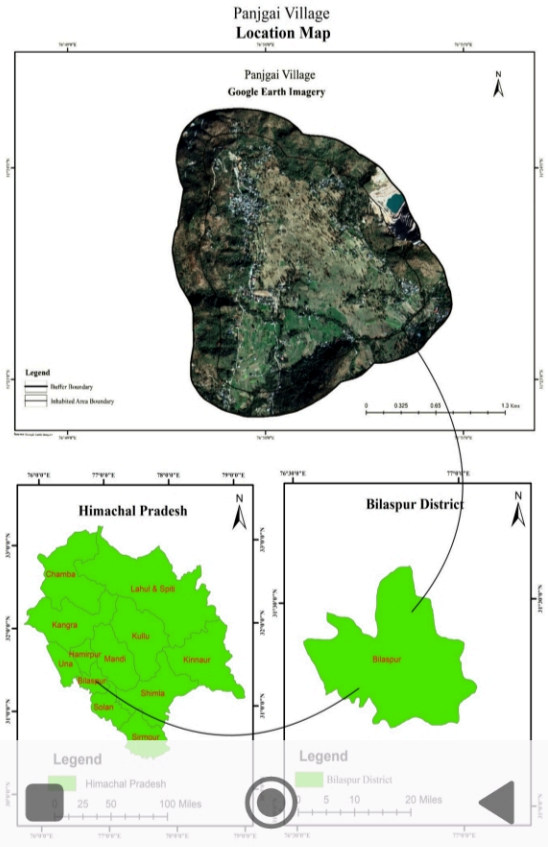

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

IRJMSH

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

डा. केशव बलिराम हेडगेवार एवं बाबासाहेब डा. भीमराव आबेडकर के राष्ट्र चिंतन का समाजशास्त्रीय अध्यनन

दामोदर गौतम,

शोधार्थी समाजशास्त्र एवं समाज नृविज्ञान विभाग, केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश एवं सहायक आचार्य समाजशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय सुन्नी जिला शिमला हिमाचल प्रदेश |
Permanent Address: VPO Chanawag Sub. Teh Dhami Distt. Shimla HP-171103
Mail_id -damodergautam@gmail.com

सारांश

डा. केशव बलिराम हेडगेवार एवं बाबासाहेब डा. भीमराव आबेडकर दोनों समका
और दोनों युग परिवर्तक थे | दोनों का संघर्ष, चिंतन एवं कार्य किसी एक जाति या वर्ग वि
नहीं था बल्कि दोनों का चिंतन संपूर्ण सामाजिक समरसता के लिए था | डा. हेडगेवार अप
राष्ट्र का एक अंश मानते है वे कहते हैं की " मैं अपने और राष्ट्र के बीच राष्ट्र को महत्व दूंगा | वहीँ दूसरी और डा. भीमराव आबेडकर कहते है की जात-पात के रहते ,न समाज संगठित हो सकता है और न उसमें राष्ट्रीय भावना जागृत हो सकती है | दोनों राष्ट्र निर्माण में संगठन और समरसता को उत्तम मानते है | डा. केशव का मानना था की "राष्ट्र के प्रत्येक गतिविधि के साथ हमारे शरीर में भी समरूप गतिविधि होनी चाहिए | मैं और राष्ट्र दोनों एक ही हैं, ऐसा समझकर जो राष्ट्र से

इतिहास दिवाकर

Itihās Diwākar

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका

(PEER REVIEWED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL)

वर्ष १४ अंक ३-४ आश्विन-पौष मास कलियुगाब्द ५१२३ अक्टूबर २०२१-जनवरी २०२२

इतिहास शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर (हि.प्र.)

ISSN 2250-2769

इतिहास दिवाकर

पीयर रिव्यूड मूल्यांकित अनुसंधान पत्रिका

वर्ष १४ अंक ३-४ आश्विन-पौष मास कलियुगाब्द ५१२३ अक्तूबर २०२१-जनवरी २०२२

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

उद्‌बोधन

- इतिहास से प्रेरणा लें — श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर, माननीय राज्यपाल, हि.प्र. — ५
- भारतीय इतिहास की दिशा — प्रो. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री — ६

संवीक्षण

- भारतीय सशस्त्र सैनिकों का स्वतन्त्रता में योगदान (१७५७-१८५६) — लकी शर्मा — १६
- जलियांवाला बाग नरसंहार : जनरल डायर एवं हंटर कमेटी — डॉ.प्रशान्त गौरव, डॉ.रमेश चन्द — २४
- स्वाधीनता आन्दोलन में हिमाचल की राजनीतिक एवं सामाजिक संस्थाएं — डॉ. शिव भारद्वाज — ३३
- राजस्थान का अप्रतिम सेनानी भूपसिंह — डॉ. धर्मचन्द चौबे — ४५
- स्वराज संघर्ष में झांसी जिले का योगदान (१९०७-१९४७) — डॉ. चित्रगुप्त — ५४
- क्रान्ति का गुमनाम सिपाही : पण्डित जयराम 'पेंटर' — डॉ. चेतराम गर्ग — ६२
- बेगार प्रथा के उन्मूलक : कुन्दामल — डॉ. राकेश कुमार शर्मा — ६७

वैदिक गणित

- Vinculum Method in Vedic Mathematics — Gopal Dass Sharma — ७४

गांव का इतिहास

- गौना गांव का इतिहास एवं संस्कृति — आचार्य रत्नचन्द 'रत्नाकर' — ८१

पुस्तक समीक्षा

- प्रखर राष्ट्रभक्त एकात्म मानववाद के प्रणेता पं. दीनदयाल उपाध्याय — दामोदर गौतम — ८६
- स्वराज संघर्ष में हिमाचल के नेपथ्य नायक (भाग-१) — सन्नी कुमार — ९१

ध्येय पथ

- गतिविधियां — ऋषि भारद्वाज — ९३
- सम्पादक के नाम पत्र — १०२

ISSN 2250-2769, वर्ष १४, अंक ३-४, आश्विन-पौष मास,
कलियुगाब्द ५१२३, अक्तूबर २०२१-जनवरी २०२२

पुस्तक समीक्षा

दामोदर गौतम

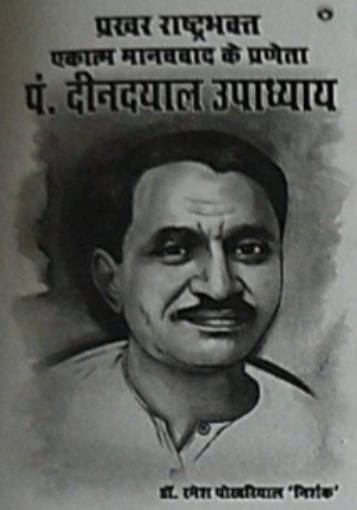

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक'

प्रखर राष्ट्रभक्त एकात्म मानववाद के प्रणेता
पं. दीनदयाल उपाध्याय
लेखक : डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक'
प्रकाशक : डायमण्ड बुक्स, दिल्ली
प्रथम संस्करण : २०१६
पृ. : २४७, मूल्य : २५०/-

प्रसिद्ध शिक्षाविद्, राजनीतिज्ञ एवं पूर्व केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' द्वारा लिखी पुस्तक पं. दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक, आर्थिक एवं राष्ट्रचिन्तन का प्रतिबिम्ब है। पुस्तक न केवल पं. दीनदयाल उपाध्याय जैसे महान व्यक्तित्व के सामाजिक दर्शन को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करती है बल्कि उस महान देशभक्त, कुशल संगठनकर्त्ता, प्रखर विचारक, दूरदर्शी, राजनीतिज्ञ और प्रबुद्ध साहित्यकार के दर्शन से जुड़ी अनेकों ऐसी जानकारियां भी देती है जो अभी तक अल्पज्ञात थी। पुस्तक उस महान व्यक्तित्व के लिए समर्पित है जिसकी आकस्मिक मृत्यु होने पर तमाम राजनीतिक मतभेद होने के बाद भी तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को भी उनके बारे में यह कहना पड़ा कि 'श्री उपाध्याय देश के राजनीतिक जीवन में प्रमुख भूमिका अदा कर रहे थे। मुझे श्री उपाध्याय की मृत्यु की खबर सुनकर गहरा आघात पहुंचा है। उनकी ऐसी दुखद परिस्थितियों में असमायिक और अप्रत्याशित मृत्यु से उनका कार्य अधूरा रहा गया है।

लेखक द्वारा पुस्तक में पं. दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक, आर्थिक और राष्ट्रचिन्तन से सम्बन्धित दर्शन को मुख्यतः ३६ प्रमुख शीर्षकों में विभाजित किया गया है। पुस्तक में पं. दीनदयाल उपाध्याय के जन्म, बचपन में ही माता-पिता का देहावसान और मामा द्वारा लालन-पोषण, शिक्षा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में एक सामान्य कार्यकर्त्ता से लेकर उनके जनसंघ अध्यक्ष पद तक के सफर और वैचारिक यात्रा को अनेक जीवन्त दृष्टान्तों एवं प्रसंगों के साथ प्रस्तुत किया गया है। स्वतन्त्र भारत की दशा और दिशा क्या होनी चाहिए इसके बारे में पं. दीनदयाल उपाध्याय द्वारा १९६५ में मुम्बई में दिए गए भाषण का उल्लेख पुस्तक में गहनता और सूक्ष्मता से किया गया है। 'भारत को भारत की ही दृष्टि से ही आगे बढ़ना पड़ेगा।' पश्चिमी विचारधारा कभी भी भारत को सही दिशा नहीं दे सकती। चाणक्य की तरह दीनदयाल उपाध्याय राज्य और राष्ट्र को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। जब तक हम अपनी राष्ट्रीय पहचान के सम्बन्ध में जागरूक नहीं होंगे। तब तक हम अपनी भविष्य की सभी संभावनाओं को विकास नहीं कर सकेंगे। लेखक द्वारा पुस्तक में पं. दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक चिन्तन की विस्तार से चर्चा की गई है। दीनदयाल उपाध्याय मानते थे कि 'दुनिया में भारत की सामाजिक संरचना सबसे जटिल है अतः जब तक किसी भी देश की सामाजिक सरंचना को ठीक से समझा नहीं जाता तब तक हम किसी भी प्रकार के

12:04 PM
Document from Da...

पुस्तक समीक्षा

दामोदर गौतम

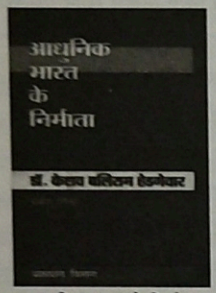

आधुनिक भारत के निर्माता
डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार
लेखक : राकेश सिन्हा
प्रकाशक : सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार,
पृ.-२४६, पांचवा संस्करण २०१८,
मूल्य-१४०/-

चर्चित स्तंभकार तथा राजनीतिक विशेषज्ञ एवं दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीति शास्त्र के प्राध्यापक राकेश सिन्हा द्वारा लिखी गई यह पुस्तक न केवल डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार के कर्मठ व्यक्तित्व को दर्शाती है, बल्कि उनके जीवन से सम्बन्धित ऐसी जानकारियां भी देती है जो अभी तक अल्पज्ञात थी। पुस्तक उस महान् व्यक्तित्व और चिन्तक के लिए समर्पित है जो कि पिछले दिनों पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी द्वारा संघ के कार्यक्रम में जाने का न्यौता स्वीकार करने और डॉ. हेडगेवार के निवास का दौरा करने पर विजिटर बुक में लिखे शब्द – ''मैं आज यहां भारत मां के महान सपूत डॉ. के. बी. हेडगेवार को श्रद्धांजलि देने आया हूं'' के कारण काफी चर्चा का विषय बना। डॉ. हेडगेवार कर्मठ सत्यनिष्ठ और राष्ट्रवादी होने के साथ-साथ एक स्वतंत्र चेता तथा भारतीय संस्कृति के परम उपासक थे। २१ अध्यायों में प्रस्तुत की गई इस शोध पुस्तक में हेडगेवार की संपूर्ण जीवन यात्रा को दर्शाया गया है। तेजस्वी बालक का जन्म, शिक्षा, हेडगेवार के कुल का इतिहास और मात्र ८ वर्ष की उम्र में देशभक्ति का भाव प्रस्फुटित होने जैसी घटनाएं, इस पुस्तक के प्रथम अध्याय को बहुत ही रोचक बनाती है। पुस्तक में उस घटना का सूक्ष्म वर्णन किया गया है जिसमें डॉ. केशव द्वारा मात्र ८ वर्ष की उम्र में ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया के राज्यारोहण के ६० साल पूरे होने पर भारत में जश्न मनाए जाने की मिठाई फैंक देना, बचपन से ही उनकी देशभक्ति को सहसा ही बताती है जो आने वाले वर्षों में दूसरी कई घटनाओं के रूप में प्रस्फुटित होने वाली थीं। लेखक ने हेडगेवार द्वारा नेशनल मेडिकल कॉलेज की पढ़ाई के दौरान देश में चलने वाली क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने संबंधी विभिन्न घटनाओं का इस पुस्तक में वर्णन किया है। डॉ. केशव अपने मेडिकल के अध्ययन के साथ-साथ देशभक्ति में भी अग्रणी थे। उनके द्वारा बंगाल में अनुशीलन समिति से जुड़ना उनकी देशभक्ति का एक अनूठा उदाहरण था। ये वे घटनाएं है जो हमारे युवाओं को अध्ययन के साथ-साथ देश प्रेम और राष्ट्रभक्ति की ओर प्रेरित करने का मार्ग प्रशस्त करती हैं। पुस्तक के आत्मदर्शन वाले अध्याय में लेखक द्वारा हेडगेवार के बताए गए देशभक्ति के १० सूत्रों का वर्णन किया है जो हमारे युवाओं को राष्ट्र चिंतन, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभक्ति और आत्म स्वतंत्रता की ओर प्रेरित करते हैं।

पुस्तक में वर्णित हेडगेवार से संबंधित सभी जानकारियां जिन संदर्भ ग्रंथों और सूचियों से ली गई है वे भी इस पुस्तक की गहनता तथा वैज्ञानिकता को सिद्ध करती हैं। पुस्तक में डॉक्टर हेडगेवार का

बाल गंगाधर तिलक से प्रेरित होना तथा कांग्रेस द्वारा चलाए गए स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लेना और उसके उपरान्त राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसी संस्था की नींव रखना, सभी घटनाओं का क्रमबद्ध वर्णन किया गया है। पुस्तक में डॉ. हेडगेवार के जीवन चरित्र, चिंतन, विचार और भ्रांतियों को दूर करना और उनका मूल्यांकन करने की लेखक द्वारा वैज्ञानिक और अनुसंधाननात्मक कोशिश की गई है।

महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलाए गए सविनय अवज्ञा आंदोलन में संघ के स्वयंसेवकों द्वारा भाग लेने सम्बन्धी संदर्भ डॉक्टर मुंजे की डायरी से लेना पुस्तक की विश्वसनीयता को बढ़ाता है। ले
ने पुसद सत्याग्रह तथा इसी के क्रम में दूसरा सत्याग्रह जिसमें की हेडगेवार को जंगल कानून तोड़
तुरंत गिरफ्तार कर लिया गया, पुस्तक में सूक्ष्म और सटीक रूप में वर्णित है। यह वह सत्याग्रह था ज
डॉ. हेडगेवार के मध्य प्रांत के सविनय अवज्ञा आंदोलन में सर्वाधिक सफल कार्यक्रमों में से एक था।

लेखक ने पुस्तक में डॉ. हेडगेवार की गिरफ्तारी के दौरान रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर बने मंच पर से जनसमुदाय को संबोधित करने वाले छोटे से किंतु उत्साहवर्धक भाषण का उल्लेख किया है। जिसमें डॉ. हेडगेवार ने कहा था कि – ''एक दशक पूर्व अंग्रेजों के खिलाफ हमने असहयोग आंदोलन शुरू किया था अब हम अंग्रेजों बेसिक कानूनों की धज्जियां उड़ा रहे हैं। सरकार को गलतफहमी है कि दमन से जनता डर जाएगी। हिंदुस्तान का पूरा इतिहास ही धर्म एवं अधर्म के बीच लड़ाई का है। हमें अंग्रेजों से

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

Impact Factor
3.811

ISSN : 2395-7115
APRIL-JUNE 2020
Vol. 11, Issue 6

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सम्पादक:
डॉ. नरेश सिहाग Editor

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

S.No. _____

Certificate

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Ms.

Damodar Gautam

Central University of Himachal Pradesh

presented a paper titled

डा. केशव बलिराम हेडगेवार एवं बाबासाहेब डा. भीमराव आंबेडकर के राष्ट्र चिंतन का समाजशास्त्रीय अध्ययन

in the

5th Annual National Conference

"Social Sciences in India's Knowledge Tradition"

(15th – 17th October 2022)

organised by

Rashtriya Samaj Vigyan Parishad (RSVP)

in collaboration with

Hansraj College, University of Delhi

Prof. S.P.M. Tripathi
Chairman
Academic Programme Committee, RSVP

Prof. (Dr.) Rama
Principal
Hansraj College, University of Delhi

समाजशास्त्र एवं सामाजिक नृविज्ञान विभाग

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

सप्तसिंधु परिसर, देहरा, जिला- कांगड़ा

ICPR

IndianOil

आज़ादी का अमृत महोत्सव

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"भारत का सामाजिक एवं सांस्कृतिक दर्शन: डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार का योगदान"

धौलाधार परिसर-1, धर्मशाला (कांगड़ा) हिमाचल प्रदेश

24-25 जून 2022

प्रमाणित किया जाता है कि डॉ./ प्रो./ श्री/ श्रीमती/ सुश्री दामोदर गौतम

संस्थान का नाम राजकीय महाविद्यालय झण्डूता, जि० बिलासपुर हि० प्र०

ने आयोजित संगोष्ठी में मुख्य अतिथि/ मुख्य विषय वक्ता/ सम्मानित अतिथि/ पदेन अतिथि/ संयोजक/ सह-संयोजक/ प्रतिवेदन लेखक/ सत्र अध्यक्ष/ शोधार्थी/ आयोजन समिति सदस्य/ मीडियाकर्मी/ संस्थागत प्रतिनिधि/ व्यक्तिशः प्रतिनिधि/ शोध पत्र प्रस्तुतकर्ता के रुप में भाग लिया है।

शोध पत्र का शीर्षक "डा० केशवराव बलिराम हेडगेवार के राष्ट्र चिन्तन में सामाजिक समरसता: : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन"

डॉ. गिरीश गौरव	प्रो. प्रदीप कुमार	प्रो. रमेश चंद्र सिन्हा	प्रो. रामनरेश सिंह	डॉ. योगेन्द्र गर्ग	डॉ. कृष्ण भट्ट
संयोजक	अधिष्ठाता, अकादमिक हि. प्र. के. विवि	अध्यक्ष, भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद	स्वतंत्र निदेशक आई.ओ.सी.एल	निदेशक, नेरी शोध संस्थान	संरक्षक, राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद

क्र.स. 240

समाजशास्त्र और सामाजिक नृविज्ञान विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

राष्ट्रीय संगोष्ठी

आधुनिक समाज दिशा एवं चुनौतियां: वांछित प्रतिउत्तर स्वामी विवेकानंद

09-11 जून 2024 हाइब्रिड मोड स्थानः सेमिनार हॉल, धौलाधार परिसर-1, धर्मशाला

सहयोगी
राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद (नई दिल्ली)
भारतीय मत, पंथ, संप्रदाय एवं समेटिक अध्ययन केंद्र, सीयूएचपी

वित्त-पोषित
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर), नई दिल्ली
मौलाना अबुल कलाम आज़ाद इंस्टीट्यूट ऑफ एशियन स्टडीज़ (MAKAIAS), कोलकाता

अभिज्ञान-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि प्रो./ डॉ./ श्री/ श्रीमती/ सुश्री DAMODER GAUTAM संस्थान का नाम A. P. G. C. SUNNI /
Ph.D. Research Scholar ने आयोजित संगोष्ठी में मुख्य अतिथि/ मुख्य विषय वक्ता/ सम्मानित अतिथि/ पदेन अतिथि/ संयोजक/ सह-संयोजक/ आयोजक सचिव/ प्रतिवेदन लेखक/
C. U. H. P.
सत्र अध्यक्ष/सत्र सह-अध्यक्ष/सत्र संचालक/शोधार्थी/विद्यार्थी/ आयोजन समिति सदस्य/ मीडियाकर्मी/ संस्थागत प्रतिनिधि/ व्यक्तिशः प्रतिनिधि/ शोध पत्र प्रस्तुतकर्ता के रूप में प्रतिभाग किया है।

शोध पत्र का शीर्षक Exploring Swami Vivekanand's Ideas on Women Empowerment and Gender Equality.

प्रो. (डॉ.) प्रदीप कुमार	डॉ. गिरीश गौरव	प्रो. (डॉ.) अनिल कुमार	प्रो. (डॉ.) शीला राय	डॉ. स्वरूप प्रसाद घोष
अधिष्ठाता, अकादमिक	संगोष्ठी संयोजक	आयोजक सचिव	महासचिव, आर.एस.वी.पी. सदस्य, आई.सी.एस.एस.आर.	निदेशक, एम.ए.के.ए.आई.ए.एस.

43

नापूलं लिख्यते किञ्चित्

आज़ादी का अमृत महोत्सव

ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश

एवं

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् (ICHR) नई दिल्ली

सौजन्य

राष्ट्रीय परिसंवाद

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन : वृत्तान्त, स्मृतियां एवं नेपथ्य-नायक

(Bharatiya Freedom Movements : Narratives, Memories and Unsung-Heros)

कलियुगाब्द 5123, विक्रमी संवत् 2078, मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिप्रदा–02 (04–05 दिसम्बर, 2021)

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि दामोदर गौतम, सहायक आचार्य - समाजशास्त्र, राज० महा० झण्डूता ने राष्ट्रीय परिसंवाद में भाग लिया। प्रतिभागी ने हिमाचल की रियासत कोट कहलूर की स्वतंत्रता संग्राम की यात्रा : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया / तकनीकी सत्र की अध्यक्षता / उपाध्यक्षता की।

आयोजक सचिव
राष्ट्रीय परिसंवाद

संयोजक
राष्ट्रीय परिसंवाद

महासचिव
इतिहास शोध संस्थान नेरी

राष्ट्रीय परिसंवाद

पश्चिमोत्तर भारत की अनुसूचित जन-जातियों का समाज, पर्यावास एवं अर्थव्यवस्था

Habitat, Society and Economy of Scheduled Tribes of Northwest Bharat

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि प्रो./डॉ./श्री/श्रीमती .....DAMODER GAUTAM, CUHP.....

ने विषय हिमाचल प्रदेश की जनजातियां एवं समाजिक समरसता: एक समाज शास्त्रिय अध्ययन

पर कलियुगाब्द 5125, विक्रमी संवत् 2080, वैशाख शुक्ल द्वितीया-तृतीया (22-23 अप्रैल, 2023) को ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर (हि.प्र.), इतिहास विभाग एवं भूगोलशास्त्र विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय परिसंवाद पश्चिमोत्तर भारत की अनुसूचित जन-जातियों का समाज, पर्यावास एवं अर्थव्यवस्था में सहभागिता /शोधपत्र प्रस्तुति/तकनीकी सत्र की अध्यक्षता/उपाध्यक्षता की।

क्रमांक 74

दिनांक 23-04-2023

आयोजन सचिव
राष्ट्रीय परिसंवाद

संयोजक
राष्ट्रीय परिसंवाद

महासचिव
इतिहास शोध संस्थान, नेरी